

## सूत्रकृतांगसूत्र-२ (फोल्डर नंबर ००१२४८)

मुख्य टाइटल	
समर्पण -----	५
प्रकाशकीय -----	७
श्रीमान् सेठ कँवरलालजी बेताला-एक परिचय -----	८
सम्पादकीय -----	९
विषय सूची -----	१४
द्वितीय श्रुतस्कन्ध-अध्ययन १ से ७	
परिचय -----	३
१. पौंडरीक – प्रथम अध्ययन -----	५-५१
अध्ययन-परिचय-प्राथमिक -----	५
पुष्करिणी और उसके मध्य में विकसित पुण्डरीक का वर्णन -----	७
श्रेष्ठ पुण्डरीक को पाने में असफल चार पुरुष -----	९
उत्तम श्वेत कमल को पाने में सफल-निस्पृह भिक्षु -----	१३
दृष्टान्तों में दार्ष्टान्तिक की योजना -----	१५
धर्मश्रद्धालु राजा आदि के मस्तिष्क में अन्यतीर्थिकों द्वारा स्वधर्मप्रवेश... -----	१७
प्रथम पुरुष-तज्जीव तच्छरीरवादी का वर्णन -----	२०
द्वितीय पुरुष-पाञ्चमहाभूतिक-स्वरूप विश्लेषण -----	२५
तृतीय पुरुष-ईश्वर कारणवादी – स्वरूप और विश्लेषण... -----	२८
चतुर्थ पुरुष-नियतिवादी – स्वरूप और विश्लेषण -----	३१
भिक्षावृत्ति के लिए समुद्यत भिक्षु के लिए वैराग्योत्पादक परिज्ञान सूत्र -----	३५
गृहस्थवत् आरंभ-परिग्रह युक्त श्रमण-माहन और इन दोनों से मुक्त... -----	४१
पंचम पुरुष-अनेक गुण विशिष्ट भिक्षु -----	४३
क्रियास्थान-द्वितीय अध्ययन -----	५२-१०५
प्राथमिक परिचय -----	५२-५३
संसार के समस्त जीव तेरह क्रियास्थानों में -----	५४
प्रथम क्रियास्थान-अर्थदण्ड प्रत्ययिक -----	५६
द्वितीय क्रियास्थान-अनर्थदण्ड प्रत्ययिक -----	५६
तृतीय क्रियास्थान-हिंसादण्ड प्रत्ययिक -----	५८
चतुर्थ क्रियास्थान-अकस्माद् दण्ड प्रत्ययिक -----	५९
पंचम क्रियास्थान-दृष्टि विपर्यास दण्ड प्रत्ययिक -----	६०
छठा क्रियास्थान-मृषावाद प्रत्ययिक -----	६१
सप्तम क्रियास्थान-अदत्तादान प्रत्ययिक -----	६२
अष्टम क्रियास्थान-अध्यात्म प्रत्ययिक -----	६२

नौवाँ क्रियास्थान-मान प्रत्ययिक-----	६३
दसवाँ क्रियास्थान-मित्र दोष प्रत्ययिक-----	६४
ग्यारहवाँ क्रियास्थान-माया प्रत्ययिक-----	६५
बारहवाँ क्रियास्थान-लोक प्रत्ययिक-----	६६
तेरहवाँ क्रियास्थान-ऐर्यापथिक, अधिकारी स्वरूप, प्रक्रिया एवं सेवन-----	६८
अधर्मपक्षनामक प्रथम स्थान के विकल्प-चर्चा अधिकारी-स्वरूप-----	७१
धर्मपक्ष नामक द्वितीय स्थान के विकल्प-----	८४
तृतीय स्थान-मिश्र पक्ष का अधिकारी एवं स्वरूप-----	८५
दोनों स्थानों में सबका समावेश-क्यों, कैसे और पहचान-----	९९
तेरह ही क्रियास्थानों का प्रतिफल-----	१०४
आहापरिज्ञा-तृतीय अध्ययन-----	१०६-१३१
प्राथमिक-----	१०६-१०७
अनेकविध वनस्पतिकायिक जीवों की उत्पत्ति...-----	१०८
नानाविध मनुष्यों की उत्पत्ति, स्थिति, संवृद्धि एवं...-----	११८
पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चों की उत्पत्ति, स्थिति, संवृद्धि एवं...-----	१२१
विकलेन्द्रिय त्रस प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति, संवृद्धि एवं...-----	१२४
अप्काय, अग्निकाय, वायुकाय और पृथ्वीकाय के आहारादि का निरूपण-----	१२६
समुच्चय रूप से सब जीवों की आहारादि प्रक्रिया और आहार-संयम-प्रेरणा-----	१३०
प्रत्याख्यान क्रिया-चतुर्थ अध्ययन-----	१३२-१४५
प्राथमिक-----	१३२
अप्रत्याख्यानी आत्मा का स्वरूप और प्रकार-----	१३४
प्रत्याख्यान क्रिया रहित सदैव पापकर्म बन्धकर्ता-क्यों और कैसे-----	१३६
संज्ञी-असंज्ञी-अप्रत्याख्यानी-सदैव पाप कर्मरत-----	१४०
संयत, विरत पापकर्म प्रत्याख्यानी-कौन और कैसे-----	१४४
अनाचारश्रुत-पंचम अध्ययन-----	१४६-१६३
प्राथमिक-----	१४६
अनाचरणीय का निषेध-----	१४७
अनाचार के निषेधात्मक विवेकसूत्र-----	१४८
नास्तिकता और आस्तिकता के आधारभूत संज्ञाप्रधान-सूत्र-----	१५२
कतिपय निषेधात्मक आचारसूत्र-----	१६१
जिनोपदिष्ट आचारपालन में प्रगति करे-----	१६३
आर्द्रकीय-छठा अध्ययन-----	१६४-१८३
प्राथमिक-----	१६३
भगवान महावीर पर लगाये गये आक्षेपों का आर्द्रकमुनि द्वारा परिहार-----	१६४
गोशालक द्वारा सुविधावादी धर्म की चर्चा-आर्द्रक द्वारा प्रतिवाद-----	१६७

भीरु होने का आक्षेप और समाधान-----	१७०
गोशालक द्वारा प्रदत्त वणिक की उपमा आर्द्रक द्वारा प्रतिवाद-----	१७१
बौद्धों के अपसिद्धान्त का आर्द्रक द्वारा खण्डन एवं स्व-सिद्धान्त का मंडन-----	१७४
पशुवध समर्थक मांसभोजी ब्राह्मणों को भोजन का फल-----	१७८
सांख्यमतवादी एकदण्डिकों के साथ तात्त्विक चर्चा-----	१७९
हस्तितापसों का विचित्र अहिंसामत-आर्द्रक द्वारा प्रतिवाद-----	१८१
दुस्तर संसार-समुद्र को पार करने का उपाय-रत्नत्रय रूप धर्म-----	१८३
नालन्दकीय-सप्तम अध्ययन-----	१८४-२१७
प्राथमिक-----	१८४
नालन्दानिवासी लेप श्रमणोपासक और उसकी विशेषताएँ-----	१८५
उदक निर्गन्थ की जिज्ञासा-गणधर गौतम की समाधानतत्परता-----	१८७
उदक निर्गन्थ की प्रत्याख्यान विषयक शंका...-----	१८८
उदक निर्गन्थ द्वारा पुनः प्रस्तुत प्रश्न और गौतमस्वामी द्वारा प्रदत्त सटीक उत्तर-----	१९२
उदक की आक्षेपात्मक शंका-गौतम का समाधान-----	१९४
निर्गन्थों के साथ श्रीगौतम स्वामी के संवाद-----	१९६
दृष्टान्तों और युक्तियों द्वारा श्रमणोपासक प्रत्याख्यान की निर्विषयता का निराकरण-----	२०१
कृतज्ञताप्रकाश की प्रेरणा और उदक निर्गन्थ का जीवनपरिवर्तन-----	२१४
<b>परिशिष्ट</b>	
गाथाओं की अकारादि अनुक्रमणिका-----	२२१
विशिष्ट शब्दसूची-----	२२३
अर्थसहयोगी सदस्यों की शुभ नामावली-----	२६१